

# साहित्य का (पाठ्य)

① साहित्य क्या है - सांस्कृत में काव्य की सबसे पुरानी परिभाषा है - शब्दार्थों सहित काव्यम् । शब्द और अर्थ का सहित भाव काव्य है । सहित भाव अर्थात् साथ-साथ होना । इस परिभाषा में साहित्य शब्द इतना महत्वपूर्ण है कि जागे चलकर यह सहित भाव ही साहित्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया ।

② साहित्य को दो भागों में विभक्त किया गया है ।

① प्रबन्ध काव्य ② दृश्य काव्य

प्रबन्ध काव्य को दो श्रेणियों में बाँटा गया -

① गद्य ② पद्य

③ पद्य - इस रचना को कहा जाता है जिसमें छंद नपे-तुले और परिभाषित नियमों के अनुसार हों । पद्य का प्रयोग प्रायः प्रशंसा और स्तुति के लिए किया जाता है । पद्य में वाक्य रचना छंद और लय के अनुशासन में होती है ।

④ गद्य - इसमें छंद के नपे-तुले नियम नहीं होते हैं । इसका प्रयोग सदा बोलने के लिए किया जाता है ।

⑤ कविता क्या है -

शमचन्द्र भुसल के अनुसार - "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी-जो वाक्य विधान करती है-इससे उसे कविता कहते हैं ।

⑥ काव्य के तीन भेद प्रचलित हैं - महाकाव्य, खण्डकाव्य और गुन्तक काव्य ।

① महाकाव्य - महाकाव्य में कथा का होना अनिवार्य है । इसमें मुख्य चरित्र के जीवन के संमिश्रता में पारण करने के कारण विविधता और विस्तार होता है । महाकाव्य खण्डों में बँटा होता है । खण्डों में अधिक घटने हैं ।

② खण्डकाव्य - खण्डकाव्य में भी कथा का होना अनिवार्य है । इसमें मुख्य चरित्र के किसी एक प्रमुख विशेषण का चित्रण होने के कारण अधिक विविधता और विस्तार नहीं होता है । खण्डकाव्य में भी खण्ड होते हैं ।

(7) गुणतक - कथा से स्वतंत्र किसी भाव-विशेष को आधार बनाकर रचे गये पद्य को गुणतक

कहा जाता है।

(8) गीत - गीत में संगीतात्मकता का होना जरूरी है।  
(9) प्रगीत - प्रगीत में गायन की अनिवार्यता है। इसे ध्वनि की आवश्यकता नहीं है। प्रगीत में वैयक्तिक भाव की तीव्रता होती है।

(10) शब्द शक्तियाँ - जिस शक्ति से शब्द का वाच्यार्थ अर्थात्

(A) अभिधा - सीधा-साफ़ अर्थ ग्रहण किया जाता है, उसे अभिधा-शक्ति कहा जाता है।

(B) लक्षणा - मुल्यार्थ की बाधा होने पर रुढ़ि या प्रयोजन को लेकर जिस शक्ति के द्वारा मुल्यार्थ से सम्बन्ध रखने वाला अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा कहते हैं।

(C) व्यंजना - जिस शक्ति से शब्द का न तो वाच्यार्थ (साधारण अर्थ) ग्रहण किया जाता है और न लक्ष्यार्थ अपितु इससे भिन्न कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, उसे व्यंजना शक्ति कहा जाता है।

(11) काव्य गुण -

(A) माधुर्य गुण - जहाँ काव्य-पाठ से सहृदय का अनुभूति आई अथवा प्रेरित हो जाता है वहाँ माधुर्य गुण होता है। अंगार, चरण एवं शान्त में रस में यह गुण विद्यमान होता है। इस गुण को मधु कोट पदावली का प्रयोग होता है।

(B) ओज गुण - जिस काव्य में पढ़ने से सहृदय के चित्त में तेज और एकाग्रता का संचार हो जाय उसे ओज गुण कहते हैं। वीर, वीरता और राँड रस में यह गुण होता है। इस गुण में क्रोध, वीर और जमास-वृद्धता होती है।

(C) प्रसाद गुण - जहाँ कविता का अर्थ और भाव सुनते ही समझ में आ जाय और सहृदय के चित्त

में व्याप्त हो जाये वहाँ प्रसाद गुण होता है। इसमें कोमल और कठोर सब तरह के वर्णों का प्रयोग किया जा सकता है।

## 11) काव्य-दोष -

(A) शब्द-दोष - शब्द के अनुचित प्रयोग से जब अर्थ का अपरूप होता है तब शब्द-दोष होता है। शब्द दोष कई हैं - श्रुति कटुत्व, मिलित्व, च्युत संसृष्टि आदि।

(B) अर्थ-दोष - कवि जिस अर्थ को व्यक्त करना चाहता है उसे विपरीत अर्थ होने पर अर्थ-दोष होता है।

(C) रस-दोष - जहाँ किसी रस या भाव के स्पष्ट नामोल्लेख के द्वारा उसे व्यक्त करने का प्रयत्न किया जाये वहाँ रस-दोष माना जाता है।

## 12) रस निष्पत्ति -

"विश्वावानुभाव व्यभिचारीलंयोगादरस निष्पत्तिः।"

विश्वाव के भेद - आलम्बन और उद्दीपन

आलम्बन के भेद - आश्रय और विषय

अनुभाव - आश्रय के शरीर विकारों को अनुभाव कहते हैं।

संचारी भाव - मन के चंचल विकारों को संचारी भाव कहते हैं।

संचारी भाव भी आश्रय के मन में उत्पन्न होते हैं। संचारी भावों को व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है।

रस रस के भेद संचारी भाव

(1) शृंगार रस -

(2) हास्य रस -

(3) वीर रस -

(4) करुण " -

(5) रौद्र " -

(6) भयातक " -

(7) वीभत्स " -

(8) अद्भुत " -

(9) शांत रस " -

रसि

हास

उद्वेग

शोक

क्रोध

भय

पुरुष

विह्वल

मिर्वंद

(13) रेखाचित्र - चित्रकला में जिस प्रकार रेखाओं के माध्यम से दृश्य या रूप को उभारा दिया जाता है उसी प्रकार जब साहित्य में शब्दों के माध्यम से दृश्य या रूप को उभारा जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र में व्यक्ति, घटना, स्थान तथा दृश्य की कम से कम समय में अधिकारिक अभिव्यक्ति की जाती है।

(14) संस्मरण - संस्मरण में स्मृति का विशेष महत्व है। इसमें काल या समय का विशेष महत्व है। संस्मरण में पथार्थ चित्रण के साथ भावना की गहराई होती है।

(15) आत्मकथा - आत्मकथा स्वयं लेखक द्वारा अपने जीवन का लम्बे वृत्त वर्णन है।

(16) जीवनी - किसी व्यक्ति विशेष के जीवन को विषय बना कर जब कोई अन्य व्यक्ति लिखता है तो उसे जीवनी कहते हैं।

(17) प्रतीक - व्यक्ति जब अपनी बात शब्दों के माध्यम से वाक्यांशों द्वारा करने में असमर्थ हो जाता है तो वह उसकी अभिव्यक्ति के लिए कुछ ऐसे समर्थ शब्दों का प्रयोग करता है, जो उसके अज्ञात, अदृश्य अथवा अनुपादित भाव अथवा विषय का स्पष्ट चित्र उपस्थित कर देता है। वह शब्द ही प्रतीक कहलाता है।

(18) विम्ब - विम्ब वह शब्द चित्र है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।  
(डा. केदारनाथ सिंह)

(19) मिथक - मिथक प्राचीन युग के संचित लोक विश्वासे का परिवर्तन रूप है। इसे आदिम युग से भी जोड़ा जाता है। विजयेंद्र स्नातक के अनुसार - साहित्यिक सृजन के क्षेत्र में मिथक अब एक ऐसा तत्व है जो भाषा को एक व्यापक आयाम देकर रहस्यात्मकता, लाक्षणिकता और विलक्षणता प्रदान करने में समर्थ है।